एकलव्य

एकलव्य है एकनिष्ठ मदार,
बाधा को करते मन से स्वीकार
चिंतनशील रहना उनका काम,
शुद्ध पानी, स्वास्थ्य प्रद रहे आवास।
परम्परा की रक्षा है संकल्प,
सस्ता, सुगम, सुलभ स्थानीय विकल्प
चापाकल का हुआ प्रचार–प्रसार,
मानव, माल–जाल पड़ा बिमार

वर्षा, कुआ, मटका फिल्टर का जल,
आओ सब मिल करे इसपर पहल
कुंआ जल जब जन पीता था,
बिना बीमारी का जीता था।
कोशी, कमला, गंडक, गंगा का मैदान,
रिलीफ नहीं, सोच देने का है एलान
स्वावलम्बन एवं संयम ही निदान,
एकलव्य जी खडे है सीना तान
आओ सबमिल मेघ पाईन पैगाम अपनावें,
जल संकट जल युद्ध से जन–जन को बचावे।